International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 325-326

प्रेमचंद के साहित्य में नारी का प्रगतिशील रूप

चन्द्रसेन
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्रं, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

वैदिक काल से ही नारी का कार्यक्षेत्र घर की चारदीवारी तक ही सीमित पाया जाता है। उपलब्ध वांड्मय से पता चलता है कि नारी का कार्यक्षेत्र घर तक ही सीमित था। परिवार के लिए ही स्वयं को समर्पित करना ही उसका कर्त्तव्य रहा है। धीरे–धीरे नारी मात्र भोग–विलास की वस्तु बनकर रह गई। नारी का संपत्ति में प्राचीन काल से ही कोई अधिकार नहीं रहा। अतः वह जीवनपर्यंत पुरुष पर ही निर्भर होकर रह गई। उसे हर कदम पर पुरुष के सहारे की आवश्यकता रहती थी। मैथिलीशरण गुप्त जी की पंक्तियां नारी जीवन का सटीक वर्णन करती है।

अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

वास्तव में नारी सदैव पीड़ित व प्रताड़ित रही है। मध्ययुग में नारी अन्य बंधनों के साथ–साथ पर्दे में भी जकड़ गई। यदि हम साहित्य देखते है तो नारी धनवानों व राजाओं की दासियों के रूप में भी कर्मशील रही है। अभिप्राय यह है कि उसे विलासिता की सामग्री से अधिक कुछ भी नहीं समझा गया। मध्ययुग की नारी के विषय में तो तुलसीदास जी ने अपनी पंक्तियों में पूर्ण क्रूरता दिखाई है। उनके समर्थक इन पंक्तियों को क्षेपक भी मानते हैं।

शूद्र, गंवार, ढोल, पशु, नारी,
ये सब ताड़ने के अधिकारी।

इन पंक्तियों से पुरुषों को नारियों पर अत्याचार करने का मानो प्रामणिक अधिकार ही मिल गया। सदियों से उपेक्षित भारतीय नारी अंग्रेजी शासन में उनके द्वारा खोले गए विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने लगी। यह संख्या भी उच्च व धनाड्य वर्ग की नारियों की थी जो नगण्य रही। शिक्षा प्राप्त पुरुषों ने भी नारी की दशा में सुधार के अनेक प्रयास किए। अंततः नारी घरों से बाहर निकलकर अपने प्रगतिशील रूप में सामने आने लगीं। सर्वप्रथम नारी राष्ट्रसेविका के रूप में ही सामने आई। प्रेमचंद जी भी नारी के अनेक प्रगतिशील रूपों में से मात्र राष्ट्र–सेविका के रूप को ही सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। राष्ट्र–सेवा प्रेमचंद जी के साहित्य का मूलस्वर रहा है। प्रेमचंद जी अहिंसा से प्रभावित थे। वे नारी के सरल, सहज, सौम्य रूप को ही स्वीकार करते हैं। हिंसक नारी उनके साहित्य में कम ही दिखाई पड़ती है। राष्ट्र–सेविका नारी में उन्होंने त्याग, बलिदान, धैर्य, दृढ़ता, साहस व राष्ट्र का पूर्ण उत्थान प्रदर्शित किया है। 'दुनिया का सबसे अनमोल रत्न' नामक कहानी की नायिका अपने प्रेमी में राष्ट्रप्रेम के उच्चतम आदर्शों को देखना चाहती है। अतः व प्रेम में राष्ट्रप्रेम के उच्चतम आदर्शों को देखना चाहती है। अतः वह प्रेम की शर्त के शर्त के रूप में राष्ट्रप्रेम के आदर्श को 'दुनिया का सबसे अनमोल रत्न' की प्राप्ति के रूप में रखती है। उसका प्रेमी उसके लिए जब दुनिया के सबसे अनमोल रत्नों के रूप में लाई गई वस्तुएं रखता है तो एक भारतीय सिपाही की रणक्षेत्रमें गिरी रक्त की आखिरी बूँद को ही वह दुनिया के सबसे अनमोल रत्न का दर्जा देती है। इस प्रकार प्रेमचंद जी राष्ट्रसेवा को ही अमूल्य निधि मानते हैं। प्रेमचंद जी ने स्पष्ट कर दिया कि जीवन के किसी भी क्षेत्र में नारी पुरुषों से पीछे नहीं है। यदि नारी को समता, स्वतंत्रता व बंधुता के भाव से जीवन में अग्रसर होने दिया जाए तो वह त्याग, बलिदान, धैर्य, लग्न से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में पुरुषों से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं निःस्वार्थ भाव से सेवा कर सकती है। अगले पृष्ठों में सुधि पाठक स्वयं निर्णय करने में सक्षम होंगे।

प्रेमचंद जी के साहित्य में नारी के विभिन्न रुपों का वर्णन हुआ। नारी शिक्षा का वह शुरुआती दौर था। कम ही नारियां पाश्चात्य शिक्षा ग्रहण कर पाई थी। इन पाश्चात्य शिक्षा–प्राप्त कुछ धनवान नारियों ने आधुनिक चेतना व पर्दे की परिधि का त्याग किया व पुरुषों के समान सहयोग दिया। धरने–प्रदर्शनों में नारियाँ पुरुषों से भी अधिक सक्रिय रहीं। आंदोलनों में उन्होंने पुलिस की हर बर्बरता का धैर्य और दृढ़ता से सामना किया। प्रेमचंद शुरुआत में आदर्शवादी साहित्य लिखते थे। वे बाद में आदर्शवादी यथार्थवाद से होते हुए अंत में यथार्थवादी साहित्य की ओर उन्मुख हो गए। इसी यथार्थ–चित्रण में उनके साहित्य में बदलते सामाजिक राजनीतिक परिवेश में उन्होंने नारी के प्रगतिशील रुप का चित्रण किया है।

देशभक्ति, राष्ट्रभक्ति व देश सेवा के लिए लग्न धैर्य, सहनशीलता, दृढ़ता आदि जितने भी गुण अपेक्षित होते हैं, वे सभी प्रेमचंद जी की राष्ट्रसेविकाओं में विद्यमान है। प्रेमचंद जी अपनी कलम के माध्यम से हजारों नारियों को अपनी राष्ट्रसेविका नारी पात्रों के माध्यम से राष्ट्रसेवा के लिए प्रेरित कर रहे थे। ऐसी ही प्रेरणा स्रोत 'जेल' कहानी की क्षमा देवी है– "जिन कारणों ने उसके बसे हुए घर को उजाड़ दिया, उसकी गोद सूनी कर दी उन कराणो का अंत करने, उनको मिटाने में जी–जान से लगी थी। औरों के लिए जाति–सेवा सभ्यता का एक संस्कार हो, या यशोपार्जन का एक साधन क्षमा के लिए तो यह एक तपस्या थी, और वह नारीत्व की सारी शक्ति और श्रद्धा के साथ उसकी साधना में लगी हुई थी।"[1] क्षमा के इसी दृढ़ व राष्ट्रसेविका का रुप प्रेमचंद जी ने इस कहानी में दर्शाया है। जेल में भी क्षमा अन्य महिला कैदियों के साथ देश–सेवा की चर्चा करके ही आनंदित होती है। क्षमा के जेल से छूटने के कुछ समय पश्चात उसके पुत्र, पति व सास को एक कृषक आंदोलन में सरकार गोली मार देती है। सरकार विरोधी जुलूस निकालने के अपराध में क्षमा को पुनः जेल हो जाती है। वह कहती है– "मुझमें अब लेश मात्र भी दुर्बलता नहीं। मैं चिंताओं से मुक्त हूँ। मजिस्ट्रेट जो कठोर–से–कठोर दंड प्रदान करे, उसका स्वागत करुंगी। पुलिस के किसी आक्षेप या असत्य आरोपण का प्रतिवाद करुंगी,

क्योंकि मैं जानती हूँ, मैं जेल के बाहर रहकर जो कुछ कर सकती हूँ, जेल के अंदर रहकर उससे कहीं ज्यादा कर सकती हूँ। जेलों के बाहर भूलों की संभावना है, बहकने का भय है, समझौते का प्रलोभन है, स्पर्धा की चिंता है, जेल सम्मान और भक्ति की एक रेखा है, जिसके भीतर शैतान कदम नहीं रख सकता।"[2]

'शराब की दुकान' नामक कहानी की नायिका अपने पति के समान बहादुर, दृढ निश्चयी, कर्त्तव्य–परायण और त्यागी है। मद्य–निषेध आंदोलन में वह शराब की दुकान पर धरना देती है। अहिंसा पर विश्वास होने के कारण जयराम के हिंसक प्रहार में शराबियों को बचाते हुए वह स्वयं घायल हो जाती है। इससे प्रभावित होकर लोग शराब का त्याग करने का निश्चय कर लेते हैं। दुकानदार भी निश्चय करते हैं– "कल से मेरा इस्तीफा है। अब विदेशी कपड़े का रोजगार करूँगा, जिसमें जरा जस भी है और उपकार भी।"[3] इस प्रकार नारी के राष्ट्रसेविका रुप से प्रेमचंद जी ने समाज सुधार के प्रयास किए है।

प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य में नारी का चित्रण एक कुशल प्रशासिका के रुप में किया है। नारी चाहे गृह प्रशासिका के रुप में या राजकीय प्रशासिका के रुप में चित्रित की गई हो, दोनों ही रुपों में वह पूर्णतः निपुण है। अवसर और सुविधाएँ दिए जाने पर नारियाँ प्रशासन में भी पुरुषों से श्रेष्ठ साबित हुई है। प्रेमचंद जी के साहित्य में नारियों के सुयोग्य गृह निर्देशन से परिवार में सुख–शांति, सौभाग्य व समृद्धि आती है। 'जुगनू' कहानी की चंद्रकुंवरि अपने पति की मृत्यु के उपरांत अंग्रेजों की जेल से किसी प्रकार मुक्त होकर अयोध्या पहुंचती है। राजा की विधवा चंद्रकुंवरि को नेपाल का छद्मवेशी प्रधानमंत्री नेपाल जाने की सलाह देता है। नेपाल उसके स्वर्गीय पति रणजीत सिंह का विरोधी था। रानी के संकोच पर वह उसे आश्वस्त करता है कि नेपाल पहुंचने पर वह अपने असली रुप में उसका स्वागत करेगा। वह उनके आवास का प्रबंध करता है।

प्रेमंचद जी ने वकील के रुप में भी नारी का चित्रण किया है। 'मिस पद्मा' कहानी की मिस पद्मा एक वकील है किन्तु उनका जीवन भ्रष्ट और निंदनीय है। मिस पद्मा को "विलास से घृणा नही घृणा थी पराधीनता से, विवाह को जीवन का व्यवसाय बनाने से। भोग में कोई नैतिक बाधा न थी। इसे वह केवल देह की भूख समझती थी। इस भूख को किसी साफ–सुथरी दुकान से भी शांत किया जा सकता है और पद्मा को साफ–सुथरी दुकान की हमेशा तलाश रहती थी।"[4] इस प्रकार वास्तव में वकील नारियां अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होकर पुरुषों के समान उच्छृंखल आचरण करने लगती हैं। यह सामाजिक बदलाव वकील नारी पात्रों में प्रेमचंद जी ने दिखाया है। वह सामाजिक–नैतिक बंधनों को तोड़ देती है। प्रेमचंद जी ने 'लाँछन' कहानी में नारी–पात्र लीला को डॉक्टर के रुप में दिखाया है।

प्रेमचंद जी नारी का कार्यक्षेत्र घर तक ही मानते थे। डॉ0 भरत सिंह के अनुसार, "प्रेमचंद नारी की शारीरिक रचना तथा अन्य अनेक ग्राहस्थिक बंधनों के कारण उसका कार्यक्षेत्र घर ही मानते है। यह पुरुष का कर्त्तव्य है कि वह उसे घर में ही पूर्णरुपेण स्वतंत्र तथा आर्थिक दृष्टि से संपन्न बनाए। स्त्री की स्वतंत्रता और आर्थिक दृष्टि से पूर्ण आत्मनिर्भरता के लिए वे वैदिक नारी का अनुसरण करने का संकेत देते है।"[5] अतः उन्होंने व्यवसाय या किसी प्रकार की जीविका करने वाली स्त्रियों की दुर्दशा ही चित्रित की है। लाँछन कहानी में मिस खुर्शेद इंदुमती महिला पाठशाला की मुख्याध्यापिका है और मिसेज टंडन महिला आश्रम की प्रधान है। मिसेज टंडन कायर, परनिंदा में रस लेने वाली, स्वार्थी और अवसरवादी महिला है। इसके विपरीत मिस खुर्शेद एक अनुभवी, विवेकी व बहादुर महिला है। लेखक ने सिद्ध किया है कि शिक्षण संस्थान अपनी स्वाभाविक गरिमा, उच्चादर्शों को खोकर भ्रष्ट आचरण के केंद्र बनते जा रहे हैं।

नारी की प्रगतिशील रुपों में विधिवेताओं, प्रशासिकाओं, चिकित्सकाओं, शिक्षिकाओं और राष्ट्रसेविकाओं के रुप में विभिन्न प्रकार की नारियों का चित्रण प्रेमचंद जी ने अपनी रचनाओं में किया है, किंतु सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रसेविकाओं को ही माना है। प्रेमचंद जी ने कम ही नारी–पात्रों के प्रगतिशील रुप का वर्णन किया है जो उस युग की परिस्थितियों का सही आंकलन करने के लिए पूर्णतः उचित था। विषमताओं से भरे उस युग में प्रेमचंद जी ने समाज की वास्तविकता का अंकन किया है। सदियों से बंधनों में जकड़ी नारियों के परिस्थितिवश अंकित विभिन्न रुपों का चित्रण करने में प्रेमचंद जी पूर्णतः सफल रहे है।

संदर्भ

1. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–7, पृ0 9–10
2. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–7, पृ0 15–16
3. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–7, पृ0 43
4. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–2, पृ0 81
5. भरत सिंह, प्रेमचंद के नारी पात्र, पृ0 257